**980511 - A1**

विद्यार्थी उत्तर-पुस्तिका में मुख पृष्ठ पर कोड नं. अवश्य लिखें।

# Class - IX
# कक्षा - IX

## HINDI
## हिन्दी

## (Course B)
## ( पाठ्यक्रम ब )

निर्धारित समय : **3** घंटे] [अधिकतम अंक : **80**

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **12** हैं।
- प्रश्न-पत्र में बाएँ हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **18** प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए **15** मिनट का समय दिया गया है। इस अवधि के दौरान छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

**निर्देश :**

(i) इस प्रश्न-पत्र के **चार** खंड हैं — **क, ख, ग** और **घ**।

(ii) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमानुसार दीजिए।

## खण्ड 'क'

**1.** अपठित गद्यांश **5**

गणितशास्त्र कहता है – एक और एक मिलकर दो होते हैं। भावनाओं की दुनिया विचित्र है। उसमें एक और एक ग्यारह होते हैं। आशय यह है कि सामूहिक बल में अत्याधिक शक्ति होती है। समूह में बल लगाने से शक्तियाँ जुड़ती ही नहीं, कई गुना बढ़ जाती हैं। मानव जीवन का अध्ययन करें तो यह सत्य पग–पग पर उद्घाटित होता प्रतीत होता है। एक व्यक्ति अपने आपको अकेला पाता है। अकेलेपन के कारण वह स्वयं को कमज़ोर अनुभव करता है। उसका मन लक्ष्य की ओर उत्साह से नहीं बढ़ पाता। परंतु जैसे ही उसे अपना मित्र साथी मिलता है, उनके काम की गति बढ़ जाती है। जो हाथ पहले उत्साहहीन, शिथिल और गतिहीन थे अब उसमें बिजली जैसी तीव्रता आ जाती है। जो मन पहले मुरझाया–मुरझाया रहता था, अब वह फूल की भाँति खिल उठता है। यह तथ्य स्वयं में सत्य है कि एकता में बल है या संगठन में शक्ति है। समूह में कार्य करने से मनुष्य में दया, करूणा, प्रेम व परस्पर सहयोग जैसे भाव स्वतः ही जागृत हो जाते हैं।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर सही विकल्प चुनकर लिखिए।

(i) 'एक और एक ग्यारह होते हैं' उक्ति का अर्थ है– **1**

(क) भावना के आधार पर शक्ति बढ़ जाती है।

(ख) सामूहिक कार्य में शक्ति क्षीण हो जाती है।

(ग) सामूहिक बल में अत्यधिक शक्ति होती है।

(घ) दो की काम की गति बढ़ जाती है।

(ii) मनुष्य की शक्तियाँ कब कई गुना बढ़ जाती हैं? **1**

(क) अकेले कार्य करने से

(ख) बाधाएँ उत्पन्न करने से

(ग) विनाशकारी कार्य करने से

(घ) समूह में बल लगाने से

(iii) अकेलापन मनुष्य को बना देता है– **1**

(क) कमज़ोर, उत्साहहीन, शिथिल व गतिहीन

(ख) दयालु, बहिर्मुखी, एकांतप्रिय

(ग) सामाजिक, अहंकारी, पराश्रित

(घ) सहयोगी, गतिशील, बेईमान

(iv) साथी के मेल से क्या परिवर्तन आता है? **1**

(क) मस्ती में वृद्धि व लक्ष्य में भटकाव

(ख) जीवन में उमंग–उत्साह में वृद्धि

(ग) विचारों में मतभेद

(घ) प्रतियोगिता की भावना की उत्पत्ति

(v) गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है– **1**

(क) उमंग व उत्साह

(ख) अकेलेपन का भय

(ग) संगठन में शक्ति है

(घ) संगठित समाज

2. अपठित गद्यांश 5

दूसरों की भलाई के विषय में सोचना तथा उसके लिए कार्य करना महान गुण है। वृक्ष अपने लिए नहीं, औरों के लिए फल धारण करते हैं। नदियाँ भी अपना जल स्वयं नहीं पीतीं। परोपकारी मनुष्य भी संपत्ति का संचय औरों के कल्याण के लिए करते हैं। मानव जीवन भी एक-दूसरे के सहयोग पर निर्भर है। मनुष्यता की कसौटी परोपकार है। परोपकार का सुख लौकिक नहीं, अलौकिक है। जब कोई व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से किसी की सेवा करता है तो उस क्षण वह मनुष्य नहीं, दीन-दयालु के पद पर पहुँच जाता है। वह दिव्य सुख प्राप्त करता है। उस सुख की तुलना में धन-दौलत कुछ भी नहीं है। यहाँ दधीचि जैसे ऋषि हुए जिन्होंने अपनी जाति के लिए अपने शरीर की हड्डियाँ दान में दे दीं। बुद्ध, महावीर, अशोक, गांधी, अरविंद जैसे महापुरूषों के जीवन परोपकार के कारण ही महान बन सकें परोपकार की भावना ही सच्ची ईश्वर पूजा है। भूखे को अन्न देना, निर्वसन को वस्त्र देना, प्यासे को पानी पिलाना, निराश को सांत्वना देना, रोगी की सेवा करना और भूले-भटके को रास्ते पर लाना प्रत्येक मानव का धर्म है और यह धर्म ही परोपकार है। मानवता की पहचान परोपकार से ही हो सकती है।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर सही विकल्प चुनकर लिखिए।

(i) मनुष्य का महान गुण कौन सा है? 1

(क) स्वार्थहीन परोपकार करना

(ख) परिश्रम करना

(ग) स्वार्थवश परकल्याण करना

(घ) अपनी जाति के लिए जीना-मरना

(ii) संपत्ति का संचय करना चाहिए- 1

(क) सुविधापूर्ण जीवन जीने के लिए

(ख) सुरक्षित भविष्य के लिए

(ग) सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए

(घ) निस्वार्थ त्याग के लिए

(iii) दिव्य-सुख की प्राप्ति कब होती है? 1

(क) लौकिक बनने पर

(ख) परोपकार से यश मिलने पर

(ग) अत्याधिक सफलता प्राप्त करने पर

(घ) आत्मिक संतोष मिलने पर

(iv) मानवता की पहचान होती है- 1

(क) विकास से

(ख) भौतिक सुखों की उपलब्धता से

(ग) कर्म करने की क्षमता से

(घ) निस्वार्थ परोपकार करने से

(v) परोपकार के बदले मनुष्य को प्राप्त होता है- 1

(क) पुण्य (ख) आत्मिक सुख

(ग) सामाजिक प्रतिष्ठा (घ) लौकिक सुख

3. अपठित काव्यांश **5**

मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती,
तुझे कुछ और भी दूँ।
माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किंतु इतना कर रहा फिर भी निवेदन –
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण,
गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण–कण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
कर रहा आराधना मैं आज तेरी,
एक विनती तो करो स्वीकार मेरी,
भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी,
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित
आयु का क्षण–क्षण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प छाँटकर लिखिए।

(i) कवि देश के लिए समर्पित करना चाहता है– **1**

(क) तन (ख) मन (ग) जीवन (घ) सर्वस्व

(ii) कवि अपनी मातृभूमि का ऋण कैसे चुकाना चाहता है? **1**

(क) मातृभूमि को स्वच्छ रखकर (ख) उसके विकास में योगदान का वचन देकर

(ग) उसकी रक्षा के लिए बलिदान देकर (घ) उसके प्रति प्रेम व्यक्त करके

(iii) कवि विनती के रूप में मातृभूमि से क्या माँग रहा है? **1**

(क) उसके चरणों की धूल व आशीष

(ख) युद्ध से बचने का बहाना

(ग) युद्ध में जीतने का वरदान

(घ) युद्ध को टालने की विनती

(iv) 'स्वप्न अर्पित' के कवि का आशय है– 1

(क) स्वप्न न देखना

(ख) सपनों में केवल स्वयं को देखना

(ग) देशहित में अपनी समस्त इच्छाओं का त्याग करना

(घ) देश की सेवा में रात भर जागना

(v) कविता का मूल भाव है– 1

(क) युद्ध की प्रेरणा

(ख) मातृभूमि की रक्षा

(ग) कर्त्तव्य निष्ठता

(घ) मानवतावादी दृष्टिकोण

**4.** अपठित काव्यांश **5**

थका–हारा सोचता मन–सोचता मन।
उलझती ही जा रही है एक उलझन।
अँधेरे में अँधेरे से कब तक तलक लड़ते रहें
सामने जो दिख रहा है, वह सच्चाई भी कहें।
भीड़ अँधों की खड़ी खुश रेवड़ी खाती
अँधेरे के इशारों पर नाचती–गाती।
थका–हारा सोचता मन–सोचता मन।
भूखी–प्यासी कानाफूसी दे उठी दस्तक
अंधा बन जा झुका दे तम–द्वार पर मस्तक।
रेवड़ी की बाँट में तू रेवड़ी बन जा
तिमिर के दरबार में दरबान–सा तन जा
थका–हारा, उठा गर्दन–जूझता मन
दूर उलझन ! दूर उलझन, दूर उलझन !
चल खड़ा हो पैर में यदि लग गई ठोकर
खड़ा हो संघर्ष में फिर रोशनी होकर
मृत्यु भी वरदान है संघर्ष में प्यारे
सत्य के संघर्ष में क्यों रोशनी हारे।
देखते ही देखते तम तोड़ता है दम
और सूरज की तरह हम ठोंकते है खम।

उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से छाँटकर लिखिए–

(i) थके–हारे मन की उलझन थी– **1**

(क) सही और गलत का निर्णय न कर पाने की दुविधा।

(ख) ग़लत मार्ग पर चलकर ही सुख प्राप्त करने का विश्वास।

(ग) अँधेरे से न जीत पाने का संशय

(घ) भ्रष्टाचारियों का साथ देना ही एक मात्र रास्ता

(ii) 'भीड़ अँधों की खड़ी खुश रेवड़ी खाती' से आशय है– **1**

(क) अँधे लोग मौज कर रहे हैं।

(ख) भ्रष्ट आचरण का बोलबाला है।

(ग) लाभ के लिए अँधा बन जाना उचित है।

(घ) आचरण का कोई मूल्य नहीं है।

(iii) 'अँधेरा' किसका प्रतीक है? **1**

(क) रात का

(ख) उदासीनता का

(ग) भ्रष्ट–व्यवस्था का

(घ) समाज का

(iv) 'झुका दे तम–द्वार पर मस्तक' में कवि किस स्थिति की ओर संकेत कर रहा है? **1**

(क) नीचे लिखे सभी।

(ख) संघर्ष से डरकर हार मान लेना।

(ग) दूसरों के प्रभुत्व के आगे सिर झुकाना।

(घ) भ्रष्ट–व्यवस्था को स्वीकार कर लेना।

(v) 'मृत्यु भी वरदान है संघर्ष में' का आशय है– **1**

(क) मृत्यु से संघर्ष समाप्त हो जाता है।

(ख) मृत्यु के बिना संघर्ष अर्थहीन है।

(ग) संघर्ष के पथ पर मिली मौत को सौभाग्य मानना चाहिए।

(घ) संघर्ष की स्थिति से पूर्व मृत्यु आना सौभाग्य है।

खण्ड 'ख'

5. (i) 'व्यवधान' का सही वर्ण-विच्छेद है- 1

(क) व् + अ + य् + अ + व + ध् + आ + न् + अ

(ख) व् + य् + अ + व् + अ + ध् + आ + न् + अ

(ग) व + य् + अ + व् + अ + ध् + अ + न्

(घ) व् + य् + आ + व् + अ + ध् + अ + न् + अ

(ii) 'दण्ड' शब्द का सही वर्ण-विच्छेद है- 1

(क) द् + अ + ण + ड

(ख) द् + अं + ड् + अ

(ग) द् + अ + ण् + ड् + अ

(घ) द् + अ + न् + ड् + अ

(iii) 'विद्यार्थी' शब्द का सही वर्ण-विच्छेद है- 1

(क) व् + इ + द् + य् + अ + र् + थ् + ई

(ख) व् + इ + द् + य् + आ + र् + थ् + ई

(ग) ई + व + द् + य् + आ + र् + थ + ई

(घ) व् + इ् + द् + य् + आ + र् + थ् + इ

(iv) 'मञ्जन' शब्द का मानक रूप है- 1

(क) मन्जन (ख) मँजन

(ग) मंजन (घ) मजंन

6. (i) नीचे दिए गए शब्दों में से सही अनुनासिक शब्द छाँटकर लिखिए- 1

(क) लहँगा (ख) लँहगा

(ग) लन्हगा (घ) लंहगा

(ii) निम्नलिखित शब्दों में से 'र्' का मानक रूप किसमें प्रयुक्त नहीं हुआ है- 1

(क) यथार्थ (ख) प्रकट

(ग) राष्ट्र (घ) गर्व

(iii) निम्नलिखित शब्दों में से सही नुक्ता वाला शब्द छाँटिए:- 1

(क) फर्ज़ (ख) फ़रज

(ग) फ़र्ज (घ) तेज़

(iv) निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय युक्त शब्द है- 1

(क) अधर्म (ख) सुंदरता

(ग) हमशक्ल (घ) लोकोक्ति

7. (i) 'दुर्' उपसर्ग से बना शब्द है– 1

(क) दुर्घटना (ख) दुरूस्त (ग) दूरदर्शी (घ) दूरंतो

(ii) उपसर्ग तथा प्रत्यय के योग से बना शब्द है– 1

(क) नाखुश (ख) स्वाधीनता (ग) स्वतंत्र (घ) मानवीय

(iii) 'किरण' का पर्यायवाची शब्द नहीं है– 1

(क) रश्मि (ख) असि (ग) मरीचि (घ) अंशु

(iv) 'बिजली' शब्द का पर्यायवाची शब्द है– 1

(क) कामिनी (ख) मंदाकिनी (ग) वामांगी (घ) दामिनी

8. (i) 'वृद्धि' शब्द का विलोम है– 1

(क) संवृद्धि (ख) घटोतरी

(ग) क्षय (घ) अभिवृद्धि

(ii) 'विरक्त' शब्द का विलोम नहीं है– 1

(क) आसक्त (ख) अनुरक्त

(ग) लुब्ध (घ) विमुख

(iii) 'चाल' शब्द का अनेकार्थक शब्द नहीं है– 1

(क) दिशा (ख) षड्यंत्र

(ग) चलना (घ) युक्ति

(iv) 'अलि' शब्द का अनेकार्थक रूप हैं– 1

(क) चंद्रमा (ख) कोयल

(ग) भँवरा (घ) सूर्य

9. (i) 'आकाश को छूने वाला' के लिए उचित शब्द है– 1

(क) आकाशगामी (ख) गगनचुंबी

(ग) आकाशीय (घ) सर्वोच्च

(ii) 'दूरदर्शी' के लिए उपयुक्त वाक्यांश है– 1

(क) दूरदर्शन पर काम करने वाला (ख) दूर से देखने वाला

(ग) दूर से दर्शन देने वाला (घ) दूर की सोचने वाला

(iii) 'सिर फिरना' मुहावरे का अर्थ है– 1

(क) क्रोधित होना (ख) घमंड होना

(ग) प्रसन्न होना (घ) संदेह होना

(iv) सहसा शेर को सामने पाकर मेरा _____ गया। रिक्त स्थान की पूर्ति उचित मुहावरे से कीजिए– 1

(क) कलेजा छलनी हो गया। (ख) दिल बाग–बाग हो गया।

(ग) खून सूख गया। (घ) अंग–अंग ढीला हो गया।

खण्ड 'ग'

**10.** किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से छाँटकर लिखिए– **5**

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।
प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग–अँग बास समानी।
प्रभुजी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभुजी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभुजी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभुजी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा।

(i) कवि से क्या नहीं छूट पा रही है? **1**

(क) राम नाम की रट (ख) राम के प्रति मोह
(ग) रटने की आदत (घ) पूजा–पाठ की आदत

(ii) चंदन और पानी का संबंध कैसा है? **1**

(क) सरल (ख) साकार
(ग) अपूर्ण (घ) अटूट

(iii) चकोर चाँद को एकटक देखता है क्योंकि– **1**

(क) चाँद उसे शीतलता प्रदान करता है।
(ख) वह चाँद से घृणा करता है।
(ग) उसे पलक झपकानी नहीं आती।
(घ) वह उससे एक निष्ठ प्रेम करता है।

(iv) सुहागे से मिलने पर सोने में क्या परिवर्तन आता है? **1**

(क) सुहागे का मूल्य बढ़ जाता है।
(ख) सोना अशुद्ध हो जाता है।
(ग) सुहणा की शुद्ध व चमकील सोने जैसा हो जाता है।
(घ) सोना अपनी चमक खो देता है।

(v) उपर्युक्त पद का मूल भाव नहीं है– **1**

(क) भगवान और भक्त में एकाकार करना।
(ख) ईश्वर की सर्वव्यापकता का वर्णन करना।
(ग) अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना।
(घ) ईश्वर की श्रेष्ठता सिद्ध करते हुए उन्हें प्राप्त करने की प्रेरणा देना।

अथवा

दुनिया में बादशाह सो है वह भी आदमी।

और मुफ़लिस-ओ-गदा है सो है वो भी आदमी।

ज़रदार बेनवा है सो है वो भी आदमी।

निअमत जो खा रहा है सो है वो भी आदमी।

टुकड़े चबा रहा है सो है वो भी आदमी॥

(i) कवि ने 'मुफ़लिस' शब्द का प्रयोग समाज के किस वर्ग के लिए किया है? **1**

(क) सत्ता चलाने वालों के लिए

(ख) धनिकों के लिए

(ग) गरीब वर्ग के लिए

(घ) उच्च ओहदे वालों के लिए

(ii) 'बेनवा' से अभिप्राय है- **1**

(क) धनवान (ख) कमज़ोर

(ग) शक्तिशाली (घ) बुद्धिमान

(iii) निअमत खाने वाले तथा टुकड़े चबाने वाले में क्या समानता है? **1**

(क) दोनों एक ही जैसा भोजन करते हैं।

(ख) दोनों की आर्थिक स्थिति एक समान है।

(ग) दोनों ही आदमी हैं।

(घ) दोनों ही अपना भोजन किसी ग़रीब को दे देते हैं।

(iv) कवि ने 'सो है वो भी आदमी' की आवृत्ति बार-बार क्यों की है? **1**

(क) आदमी के विविध रूप बताने के लिए।

(ख) आदमी की उपस्थिति दिखाने के लिए।

(ग) आदमी को आमंत्रित करने के लिए।

(घ) आदमी को अपराधी सिद्ध करने के लिए।

(v) उपर्युक्त पंक्तियों में कवि का मुख्य उद्देश्य रहा है- **1**

(क) आदमी को उसकी असलियत का आईना दिखाना।

(ख) आदमी को उसकी अच्छाइयों, बुराइयों, सीमाओं व संभावनाओं से परिचित करवाना।

(ग) आदमी को उसकी स्वाभाविक विविधता से परिचित करवाना।

(घ) उपरोक्त सभी।

**11.** निम्नलिखित में से किन्हीं दो के उत्तर संक्षेप में दीजिए – **2.5+2.5=5**

(क) धूल के संसर्ग से बचने वाली नगरीय सभ्यता का क्या दुर्भाग्य है?

(ख) वृद्धा का बाज़ार में खरबूजे बेचना वहाँ खड़े लोगों को बेहयाई क्यों लगी?

(ग) तेनजिंग कौन थे? उन्होंने बचेन्द्री की प्रशंसा किन शब्दों में की?

(घ) वृद्धा व संभ्रांत महिला का दुःख समान होते हुए भी भिन्न कैसे था?

**12.** क्या आप इस बात से सहमत हैं कि धूल की उपेक्षा करके शहरी सभ्यता अपने अस्तित्व की उपेक्षा भी कर रही है? तर्कयुक्त उत्तर दीजिए। **5**

अथवा

'दुख मनाने का भी एक अधिकार होता है।' टिप्पणी कीजिए।

**13.** निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– **5**

ल्होत्से की ओर से एक बहुत बड़ी बर्फ की चट्टान नीचे खिसक आई थी। सोलह शेरपा कुलियों के दल में से एक की मृत्यु हो गई थी और चार घायल हो गए थे। इस समाचार के कारण अभियान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाए अवसाद को देखकर हमारे नेता कर्नल खुल्लर ने स्पष्ट किया कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में ख़तरों को और कभी–कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए। उपनेता प्रेमचंद, जो अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे थे, 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने हमारी पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से हमें अवगत कराया। उन्होंने कहा कि उनके दल ने कैंप–एक (6000 मी.), जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है।

(i) शेरपा कुलियों के साथ क्या दुर्घटना घटी थी? **1**

(ii) कर्नल खुल्लर ने अभियान दल के उदास सदस्यों को किस तथ्य से परिचित करवाया? **2**

(iii) अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था? उन्होंने अभियान दल के सदस्यों को क्या जानकारी दी? **2**

अथवा

जो बचपन में धूल से खेला है, वह जवानी में अखाड़े की मिट्टी में सनने से कैसे वंचित रह सकता है? रहता है तो उसका दुर्भाग्य है और क्या? यह साधारण धूल नहीं हैं, वरन् तेल और मट्ठे से सिझाई हुई वह मिट्टी है, जिसे देवता पर चढ़ाया जाता है। संसार में ऐसा सुख दर्लभ है। पसीने से तर बदन पर मिट्टी ऐसे फिसलती है, जैसे आदमी कुआँ खोदकर निकला हो। उसकी माँसपेशियाँ फूल उठती हैं, आराम से वह हरा होता है, अखाड़े में निर्द्वंद्व चारों खाने चित्त लेटकर अपने को विश्वविजयी लगाता है। मिट्टी उसके शरीर को बनाती है क्योंकि शरीर भी तो मिट्टी का ही बना हुआ है।

(i) धूल में बचपन व्यतीत करने वाले का सबसे बड़ा दुर्भाग्य क्या है? **1**

(ii) लेखक ने अखाड़े की मिट्टी का महत्त्व कैसे स्पष्ट किया है? **2**

(iii) अखाड़े की मिट्टी का स्पर्श करने वाले पर क्या प्रभाव पड़ता है? **2**

14. (क) रैदास के स्वामी क्या-क्या कार्य करते हैं? 2

(ख) रहीम ने सागर की अपेक्षा पंकजल की महानता कैसे सिद्ध की है? 2

(ग) आदमी 'पीर' कब बन जाता है? 1

15. अस्वस्थ लेखिका का ध्यान गिल्लू किस प्रकार रखता था? इस कार्य से गिल्लू की कौन सी विशेषता का पता चलता है? 3

अथवा

कुएँ से चिट्ठी निकालने में लेखक द्वारा बनाई गई पूर्व-योजना क्यों सफल नहीं हुई?

16. बाहरी लोगों का लगातार आना त्रिपुरा के लिए लाभदायक कैसे साबित हुआ? 2

खण्ड 'घ'

17. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए- 5

(i) तनावों से घिरा महानगरों का जीवन
- विकास की अंधी दौड़
- मानवीय संबंधों का ह्रास
- दिखावे से भरी ज़िंदगी
- तनाव व उससे बचने के उपाय

(ii) संतोष : सबसे बड़ा धन
- अन्य सभी धन इसके समक्ष तुच्छ
- पैसा लालच और कामना देता है।
- संतोष : प्रसन्नता का सूचक
- आनंदमयी दशा

(iii) राष्ट्र हमारा, सबको प्यारा
- आकर्षक भौगोलिक सौंदर्य
- प्राचीन संस्कृति
- शांतिप्रिय राष्ट्र
- चहुँमुखी विकास

18. अपने पिछले पत्र में आपके बड़े भाई ने आपको समय का सदुपयोग करने की सीख दी थी। अपने बड़े भाई को उनके द्वारा दी गई सीख पर आचरण करने का आश्वासन देते हुए एक पत्र लिखिए। 5

अथवा

अपने चाचा जी को पत्र लिखकर आग्रह कीजिए कि वे आपकी आने वाली अर्द्धमासिक परीक्षा की तैयारी के लिए आपको विशेष सुझाव देकर आपका मार्गदर्शन करें।

- o 0 o -